अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

गांधी का साम्य-योग, सर्वोदय और प्रेमचन्द

प्रो0 शिशिर कुमार पाण्डेय
पूर्व संकायाध्यक्ष
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित वि0वि0)
विशाल खंड 4, गोमती नगर, लखनऊ, (उ0प्र0) - 226010

शोध सारांश:

गांधी का साम्प-योग हमारे राष्ट्र को राजनीतिक और आर्थिक बन्घनों से मुक्ति प्रदान करने का अनुपम सिद्धान्त था। सवादेय सिद्धान्त की परिकल्पना साम्प योग पर आधारित थी। समता मूलक समाज की स्थापना में अतीत के जीवन दर्शन, युगीन अपेक्षाएं और भविष्य की दृष्टि से का सम्यक समावेश होता है। इसी सर्वािदय सिद्धान्त को प्रेमचन्द ने भी अपने साहित्य में समाहित किया है। अपनी व्यवहारिक रचनाओं के लिए विख्यात साहित्यकार की रचनाधार्मता सर्वािदय भाव से अनुप्राणित है। प्रस्तुत शोध पन्त में तर्क और साक्ष्य के आधार पर गांधी जी के साम्य योग, सर्वािदय और प्रेमचन्द के सृजन में साभ्यता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: साम्प-योग, सर्वािदय, साहित्य, समाज-सापेक्ष, अद्वैत, जीवन-दर्शन

प्रास्तवाना:-

महात्मा गांधी साम्यवादी के स्थान पर साम्ययोगी थे। इनका मत था कि मनुष्य की प्रकृति और प्रवृत्ति सद्‌गुणोन्मुख होती है। उनमें आने वाली दोष परिथितिजन्य होते हैं। अर्थात गांधी जी मुनष्य की गुणात्मक सत्ता में विश्वास रखते थेे परिस्थिति - जन्य दोष को तो उस राख की तरह मानते थे जो कालान्तर में प्रज्वलित अनिल के ऊपर आच्छादित हो जाती है। आवश्यकता इस बात की होती है कि मनुष्य के मार्ग में उपस्थित होने वाली सामयिक बाधाओं को हटाते रहने की चेष्टा होनी चाहिए। इससे मनुष्य में रचनात्मक परिवर्तन आता है। सारी व्यवस्थाओं को मनुष्य के स्वयं कतृंत्व और स्वेप्रेरित शक्ति को जगाने में योगदान करना चाहिए।

गांधी जी के साम्य-योग का धवल सौध प्रत्येक इन्सान की आम निष्ठाा स्वशासन, आत्मप्रेरित कर्तत्व-शक्ति और स्वसंस्कार की सृदृढ़ आधारशीला पर निर्मित हुआ है। साम्य-योग का प्रथम सोपान भयोत्पादक शासन से मुक्ति पाने की साधना है। इसी मुक्ति में नैतिक, सामाजिक, संास्कृतिक और आर्थिक विकास संभव है। इसमें मानवीय मूल्यों की शाश्वति पर विशेष बल दिया जाता है।

साम्य-योगी गांधी का कहना था कि गरीबी-अमीरी न ईश्वर - प्रदत्त है और नहीं पूर्वजन्म के संस्कारों का परिणाम है। यह पूर्णतः मनुष्य-कृत है। आर्थिक विषमताएं समाज द्वारा उत्पन्न की जाती हैं। ये नैसगिंक नहीं होती अतः इसका निराकरण समाज की पहली आवश्यकता है हालांकि वे आर्थिक विषमताओं को ही समाज के सभी विकारों का कारण नहीं मानते थे। उनका विश्वास था कि कृत्रिम व्यवस्थाओं को मिटाकार इस प्रकार की अर्थ-रचना की जानी चाहिए जिसमें सभ्यता और संस्कृति की प्रतिभाएं कुन्दन हो उठें।

साम्य-योग स्वामित्व की भावना का निराकरण प्रस्तुत करता है। गांधी जी अनुसार साम्य-योग की मान्यता रही है - ‘‘सबै भूमि गोपाल की” - गोपाल यानी जनता, ‘‘सर्व खल्विदं ब्राम्ह्या” आदि का उदात्त आदर्श। साम्य-योग के अन्तर्गत लोकात्मक और ईश्वर की सत्ता में अबिच्छिन्न विश्वास होता है। भ्रम की अपरिमेय महत्ता,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

आर्थिक विकेन्द्रीकरण, उत्पादक की प्रतिष्ठा, आवश्यकताओं के न्यूनीकरण, में अप्रतिक्रियावादी आचरण और धार्मिक - नैतिक मूल्यों के स्थिरीकरण में विश्वास रखना ही किसी साम्य-योगी के लक्षण हैं।

सर्वोदय का सिद्धान्त

भारत को राजनीतिक और आर्थिक बन्धनों से मुक्ति दिलाने तथा साम्य-योग की साधना को सिद्धि में परिणत करने के लिए महात्मा गांधी ने सर्वोदय-सिद्धान्त की परिकल्पना की। माँ पुतली की धार्मिक भावनाएं और नैतिक संस्कार, रस्किन, थोटो और टालस्टाय की विचार धाराएं, परतंत्रता के पाश में अवद्ध देश की विषमता मूलक स्थितियां तथा पूरे विश्व में उद्वेलित होने वाली स्वातंत्र्य चेतना ने मिलकर गांधी जी को कुछ सोचने के लिए प्रेरित किया था। उन्होने इस सभी परिस्थितियों के परिवेश में बड़ी गहराई से सोचा इस सोच में भारतीय अतीत के जीवन-दर्शन, युगीन अपेक्षाएं और भविष्य की दृष्टि ने भी अपनी भूमिका निभाई और उनके मन में सर्वोदय जैसे क्रान्तिकारी भाव का उदय हुआ।

एक पुस्तक का करिश्मा

सर्वोदय के जन्म के संदर्भ में यहां गांधी जी के ही कुछ शब्द संगीत और प्रासंगिकता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं: ‘‘वे पोलाक मुझे छोड़ने स्टेशन तक आएं और यह कहकर कि ‘‘यह पुस्तक रास्ते में पढ़ने योग्य है, इसे पढ़ जाइये आपको पसन्द आयेगी। “उन्होने रस्किन की ” अन्टु दिस लास्ट “ मेरें हाथ मेंें रख दी।

इस पुस्तक को हाथ में लेने के बाद में छोड़ ही न सका। इसने मुझे जकड़ लिया। टेªन शाम को डरबन पहुँचती थी। पहुँचने के बाद मुझे सारी रात नींद नही आई। मैंने पुस्तक में सूचित विचारों को अमल में लाने का इरादा किया। ऐसी पुस्तकों में जिसने मेरे जीवन में तत्काल महत्व के रचनात्मक परिवर्तन कराये, वैसी तो यही एक पुस्तक कही जा सकती है। बाद में मैंने उसका तरजुमा किया और वह “सर्वोदय” के नाम से छपा।

मेरा विश्वास यह है कि जो चीज मेरें अन्दर गहराई में छिपी पड़ी थी, रस्किन के इस ग्रन्थ - रत्न में मैंने उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा।

मैं “सर्वोदय” के सिद्धान्तों को इस प्रकार समझा हूँः

1. सबकी भलाई में अपनी भलाई निहित है।
2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए क्योकिं आजीविका का हक सबके लिए एक समान है।
3. सहज मजदूरी का, किसान का जीवन सच्चा जीवन है।

पहली चीज को मैं जानता था। दूसरी को मैं धुंधले रुप में देखता था। तीसरी हा मैंने विचार ही नहीं किया था। “अन्टु दिस लास्ट” ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया कि पहले में दुसरे दोनों सिद्धान्त समाये हुए हैं। सबेरा हुआ और मैं इस पर अमल करने के प्रयत्न में लगा।“[1]

बात स्पष्ट हो गई होगी कि “सर्वोदय” का सिद्धान्त अमल में लाने का सिद्धान्त है, व्यावहारिक जीवन में उतारने का सिद्धान्त है और सिद्धान्त है सामाजिक धरातल पर जीवन - मूल्यों के उतारने का। इसी सिद्धान्त को अमली जामा पहनाने के लिए गांधी जी ने कुछ आदर्श, कुछ कार्यक्रम तैयार किया जिन्होने दुनिया को एक अभिनव अर्थशास्त्र से परिचित कराया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

सर्वोदय का आदर्श

सर्वोदय का आदर्श है- अद्वैत और उसकी नीति है- समन्वय। मानव- निर्मित विषमता का उन्मूलन ही इसका लक्ष्य है। सर्वोदय की दृष्टि में जीवन एक विद्या है और साथ ही कला भी। जीव मात्र के लिए समादर, हर एक के प्रति सहानुभूति सृजित करना ही सर्वोदय ही यात्रा है। जब जीवन में प्रेम और सहानुभूति की कल-कल वाहिनी की अमृत की धारा प्रवाहित होती है तब सामाजिक जीवन की कल्पता पुष्पानन्द से आच्छादित हो उठती है।

डर्विन "सरवाइवल ऑफ़ द पिटेस्ट" कह कर रुक गया था, "लिव एण्ड लेट लिव" कहकर इक्सले एक कदम आगे बढा़ गांधी मानवता के सर्वोच्च शिखर पर चढ़कर बोला "तुम दुसरों का जीवित रखने के लिए जिओ, तभी सबका उदय होगा।

इस प्रकार सर्वोदय, समाज-सापेक्ष, शाश्वत और व्यापक मूल्यों की स्थापना तथा बाधक स्थितियों का निराकरण प्रस्तुत करता है। यह कार्य न विज्ञान द्वारा और नहीं सत्ता द्वारा सम्भव है। सर्वोदय की पृष्ठिभूमि आध्यात्मिक है। सर्वोदय वर्ग-विहीन, जाति-विहीन और शोषण- विहीन समाज की संरचना करना चाहता है। ऐसे ही समाज में व्यक्ति अथवा समूह को सर्वागीण विकास के साधन तथा अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। सर्वोदय की सामाजिक क्रान्ति सत्य और अहिंसा द्वारा ही संभव है। हमारे ऋषियों ने इस आदर्श का प्रतिपादन सुदुर अतीत में ही कर दिया था।

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात् ।।

इसी संदर्भ में जैनाचार्य समन्त भद्र का कहना भी महत्वपूर्ण है:

सर्वाषदामन्तकर निरन्तं सर्वोदयं तीर्थामदं तबैब। "सर्वोदय राजनीति का नहीं, लोकनीति का पक्षधर है। सर्वोदय का क्रम शासन से अनुशासन की ओर, सत्ता से स्वतंत्रता की ओर, नियंत्रण से संयम की ओर और अधिकारों की स्पर्धा से कर्त्तव्यों के आचारण की ओर बढ़ने का है।

गांधी जी के इस सर्वोदय सिद्धान्त को प्रेमचन्द भी अपने साहित्य में उतारने की कोशिष करते रहे थे, इसलिए वे भी व्यवहारिक रचना के हिमायती थे। उनके खुद का जीवन सर्वोदय भाव से अनुप्राणित था, फलतः वही अनुप्राण उनकी कथाओं में प्रतिमूर्त हो उठा था। "हंस" में उन्होने लिखा: "हमारी कला यौवन के प्रेम मे पागल है और यह नहीं मानती कि जवानी छाती पर हाथ रखकर कविता पढने, नायिका की निष्ठुरता को रोना रोने या उसके रुप - गर्व पर और चोचलों पर सिर धुनने में नहीं है। जवानी नाम है आदर्शवाद का, हिम्मत का, कठिनाई से मिलने की इच्छा का, आत्म-त्याग का। और यह अवस्था उस समय पैदा होगी जब हमारा सौदंर्य व्यापक हो जायेगा, जग सारी सृष्टि परिधि में आ जायेगी। वह किसी विशेष श्रेणी तक सीमित न होगा, उसकी उड़ान के लिए केवल बाग की चहार दीवारी न होगी, किन्तु वह वायुमण्डल होगा जो सारे भूमण्डल को घेरे हुए है।"[2]

प्रेमचन्द के उक्त उद्धरण में तर्क और साक्ष्य की आवश्यकता नहीं रह गयी होगी। बिल्कुल साफ लग रहा है कि सर्वोदय की चरितार्थता के लिए जो काम गांधी जी अपने शांतिपूर्ण आन्दोलनों और सार्वजनिक भाषणों द्वारा कर रहे थे वही काम प्रेमचन्द अपने कथा-लेखन द्वारा कर रहे थे। क्या प्रेमचन्द अपने कथा - लेखन द्वारा कर रहे थे। क्या प्रेमचन्द के अग्रांकित कथन से लोगों को सर्वोदय - सदृश जीवन विताने की प्रेरणा नहीं मिली होगी, "साहित्य का उद्देश्य जीवन के आदर्श को उपस्थित करना है, जिसे पढकर हम जीवन में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

कदम-कदम पर आने वाली कठिनाइयों का सामना कर सकें। अगर साहित्य से जीवन का सही रास्ता न मिले, तो ऐसे साहित्य से लाभ ही क्या? ऊँचे और पवित्र विचार ही साहित्य की जान है।"[3]

गांधी की सर्वोदय, अर्थशास्त्र के वस्तुनिष्ठ उत्पादन का नहीं, मानव निष्ठ उत्पादन का परिवेश बनाता है। इसका केन्द्रीय मूल्य मानवीय नैतिकता है। धन का क्रम इसके बाद आता है। मनुष्य को धन की प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता के लिये प्रेरित करके न तो समाज में प्रेम और सहयोग उत्पन्न किया जा सकता है और न सामाजिक सम्बद्धन किया जा सकता है। साहित्य के लिए "सम्पूर्ण भूमण्डल को घेरने वाले जिस वायुमण्डल का" उल्लेख प्रेमचन्द ने किया है वही "वसुधेव कुटुम्बकम्" का आदर्श सर्वोदय ने भी दिया है।

सर्वोदय समाज में व्यवस्था का अर्थ होगा, अर्थ की व्यवस्था न रहेगी। इस व्यवस्था के लिए गांधी का कहना था: "मानव के कार्यो की वर्तमान परिधि अविभाज्य है। उसे आप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक या केवल धार्मिक टुकड़ो में विभाजित नहीं कर सकते।" [4] सर्वोदय की मूल आत्मा है, एक समग्र व्यक्ति।"

प्रेमचन्द भी आदमी के इसी अविभाज्य समूचेपन के लिए चिन्तित थे। " साहित्य और समाज तथा राजनीति का सम्बन्ध पूर्ण तथा अटल है। समाज में जो हानि - लाभ तथा सुख-दुख होता है, वह आदिमियों पर ही होता है न राजनीति में जो सुख-दुख होता है वह भी आदिमियों पर ही पड़ता है। साहित्य से लोगों को विकास मिलता है। साहित्य से आदमी की भावनाएं अच्छी और बुरी बनती है। इन्हीं भावनाओं को लेकर आदमी जीता है और इन सब चीजों की उत्पत्ति का कारण आदमी ही है। जब तक यहां के साहित्य में तरक्की न होगी, तब तक साहित्य, समाज और राजनीतिक सबके सब ज्यों के त्यों पड़े रहेंगे।"[5] प्रेमचन्द के साहित्य में महात्मा गांधी का विश्व-बन्धुत्व - भाव ओत - प्रेत दिखलाई पड़ता है यदि गांधी के उपेदश विराट् समाज के अग्रगन्ता थे तो प्रेमचन्द का साहित्य भी इन्सानियत की लड़ाई में अग्रिम दस्ता था।

सर्वोदय के साधन

महात्मा गांधी सर्वोदय की स्थापना के लिए साधन की पवित्रता में अट्ट निष्ठा रखते थे। वे कहते थे: "मैं अहिंसक क्रान्ति का कालकार हँू ।वे सर्वोदित समाज की रचना के लिए दो उपायों पर बहुत बल देते थे। राजनीतिक और आर्थिक संस्थाओं के हाथ में केन्द्रित सत्ता का विकेन्द्रकीकरण उनका पहला उपाय था और दूसरा था जनता को सत्याग्रह के शास्त्र और उसकी कला की शिक्षा देने की व्यवस्था करना।

गांधी का कहना थाः "सत्य और अहिंसा की बनियाद पर ही सर्वोदयया का सारा प्रसाद खड़ा है। ब्रह्यचर्य और अस्वाद, अस्तेय और अपरिग्रह, अभय और शरीर-श्रम, अस्पश्यता - निवारण और सर्व-धर्म-समभाव तथा स्वदेशी-ये एकादर्श व्रत सर्वोदय के मूल साधन हैं। परन्तु सत्य और अहिंसा की साधना में उन सबका समावेश हो जाता है "।[6]

श्रम-निष्ठा, सादगी, विकेन्द्रीकरण-इन उदात्त सामाजिक मूल्यों को मूलाधार निरुपित कर सारी अर्थ-व्यवस्था का संगठन करना गांधी जी का उपदेश था। खादी और ग्रामोद्योग, हल और चरखा, इसकी बुनियाद होगी। हर आदमी श्रम करेगा, हर आदमी पड़ोसी का ध्यान रखेगा। न शोषण होगा, न अन्याय। सम्पत्ति वाले सम्पत्ति को धरोहर मानेंगे। प्रेम की सत्ता चलेगी, प्रेम हा ही राज्य होगा, प्रेम का अनुशासन कल्पवृक्षवत् होगा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

उपसंहार:

सम्पूर्ण गांधी - बाङ्मय और प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य इस बात के प्रमाण है कि ये लोग हर प्रकार के शोषण का अन्त करने के लिए सर्वतो भावेन जूझते रहे हैं। इस लोगों के जूझने में जीवन की व्यावहारिकता काम रही थी। दोनों ही परिस्थितियों के भोक्ता रहे और दीन-हीन उपेक्षित-पीड़ि-शोषित जनता के वकील भी। जीवन की सुविधाओं के निर्वासित लोगों के साथ रहकर अपने अनुभवों को प्रमाणित बनाया और कदम-कदम पर विषमता से आक्रान्त लोगों की छटपटाहट को अपनी लेखनी में उतारा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. गांधी: आत्मकथा, पृ 116।
2. हंस, जनवरी 1935।
3. वहीं।
4. तेन्दुलकर: महात्मा, खण्ड 9, पृ0 387।
5. प्रेमचन्द - घर में, पृ0 68।
6. दादा धर्माधिकारी: सर्वोदय दर्शन, पृ0 277।